‘गोपाल सिंह ‘नेपाली’ जयन्ती समारोह’ में

<u>महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन</u>

(स्थान–ए.एन. सिन्हा इंस्टीच्यूट, दिनांक–11.08.2016, समय अपराह्न 4.00 बजे)

राज्य के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री शिवचंद्र राम जी, श्रीमती उषाकिरण खान जी, प्रो॰ किरण धई जी, श्री उत्तम सिंह जी, श्री कुमार अरुणोदय जी, कार्यक्रम की आयोजिका डॉ॰ सविता सिंह ‘नेपाली’, सभी साहित्यिक जन, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

बिहार के सपूत और हिन्दी के लोकप्रिय कवि स्व॰ गोपाल सिंह ‘नेपाली’ जी की जयन्ती के अवसर पर आज मुझे अपने श्रद्धा–सुमन निवेदित करने का सौभाग्य मिला है। नेपाली जी उन चंद साहित्यकारों में शुमार हैं, जिनकी बदौलत बिहार हिन्दी साहित्य जगत् में अपनी अनूठी पहचान रखता है।

मित्रों, आप सभी अवगत हैं कि मैं साहित्य–जगत् का व्यक्ति नहीं हूँ। कानून और वाणिज्य की किताबों से मेरा रिश्ता–नाता रहा है। इसलिए आपके बीच बहुत गहराई और व्यापकता से मैं साहित्यिक बातें रख पाऊँगा, ऐसा मेरे लिए न तो संभव है और न ही आपकी मुझसे अपेक्षा होनी चाहिए। नेपाली जी द्वारा सृजित

साहित्य की सामान्य प्रकृति की कुछ बातें आप के समक्ष रखने का प्रयास करूँगा।

कविवर नेपाली जी जिस कद के कवि थे, उनमें कविता की जो ऊँचाई थी, उसके अनुरूप, मुझे लगता है, साहित्य–समालोचना –जगत् की ओर से उन्हें पर्याप्त सम्मान मिलने में थोड़ी कोताही हुई है। ऐसा क्यों हुआ, कैसे हुआ–इस बात की गहराई में तो आप सभी समालोचक ही जा सकते हैं, परंतु मुझे यह प्रतीत होता है कि नेपाली जी के साथ साहित्यिक समालोचकों के द्वारा समुचित न्याय नहीं हो पाया। वे जनता के कवि थे, जनता ने उन्हें अपना हृदय–हार बनाया था। 'गीतो के राजकुमार' के रूप में जाने गए। मंचों पर तूती बोलती थी उनकी। श्रोता दूर–दूर से उनके नाम सुनकर कवि–सम्मेलनों में खिंचे चले आते थे। अपने प्रिय कवि की कविताओं को सुनकर अघा जाते थे, जमकर तालियाँ भी बजाते थे, और अपने प्रिय कवि की झोली अपनी 'वाह–वाह' की बोली से भर दिया करते थे। आम जनता का यह कवि भी बड़े प्रेम से अपने मस्ती भरे गीतों को सुनाता रहता था। देश और समाज की खातिर सबको जगाए रखता था। परंतु फिर भी अगर साहित्य के इतिहास की ओर नजर दौड़ायी जाए तो लगेगा कि जितनी प्रतिष्ठा और साहित्यिक गरिमा के वे हकदार थे, वह उन्हें हिन्दी साहित्य के इतिहास में शायद नहीं मिल पाई। इसका एक प्रमुख कारण शायद

यह रहा कि तत्कालीन समय में साहित्य के इतिहास–लेखन और समालोचना के क्षेत्र में बिहारी प्रतिभाएँ बहुत मजबूत पकड़ नहीं बना पाई थीं। साहित्य के इतिहास–दर्शन बिहार में जरूर रचे गए, परंतु आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी, डॉ॰ नगेन्द्र और डॉ॰ नामवर सिंह जैसे साहित्य का इतिहास लिखनेवाले समालोचकों का समूह तब बिहार में सामने नहीं आ पाया था। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा सरीखे कुछ उद्‌भट विद्वान इस कमी को बहुत हदतक पूरा कर रहे थे, परंतु जो सामूहिक प्रयास बिहार के कवियों को मजबूती के साथ हिन्दी साहित्य में स्थापित और महिमान्वित करने के लिए अपेक्षित था, उसमें संभवतः कमी रह गई और उसी कमी के शिकार तब के लोकप्रिय कवि गोपाल सिंह नेपाली सहित बिहार की दर्जनों कवि–प्रतिभाएँ हो गईं। छायावादी युग के चारों प्रतिनिधि कवि–पंत, प्रसाद, निराला, और महादेवी–यद्यपि एक ही प्रान्त के कवि थे, किन्तु जब हम 'छायावाद' के बाद की हिन्दी कविता पर नजर दौड़ाते हैं तो यह पाते हैं कि छायावादोत्तर कविता के क्षेत्र में तो जैसे बिहारी कवियों की तूती बोलती थी। गोपाल सिंह नेपाली, रामधारी सिंह 'दिनकर', आरसी प्रसाद सिंह, जानकी वल्लभ शास्त्री, केदार नाथ मिश्र 'प्रभात', मोहनलाल महातो 'वियोगी, कलक्टर सिंह 'केसरी' रामदयाल पांडेय, रामगोपाल शर्मा 'रूद्र' सहित दर्जनों कवि

हिन्दी–काव्य– जगत् में तब धूम मचाए हुए थे। मुझे लगता है, इन तमाम कवियों की रचनाओं का पुनर्मूल्यांकन अपेक्षित है, ताकि हिन्दी साहित्य–जगत् में इन्हें इनका वास्तविक हक मिल सके। साहित्य, राजनीति, कला, संस्कृति या जीवन का कोई भी प्रक्षेत्र हो, इतिहास का पुनरावलोकन होते रहना चाहिए। शोध–प्रक्रिया निरंतर जारी रहनी चाहिए। इससे हिन्दी साहित्य और समृद्ध ही होगा।

गोपाल सिंह 'नेपाली' उत्तर छायावाद युग के प्रतिनिधि कवियों में कई दृष्टि से विशिष्ट कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति सहज अनुराग का भाव है, देश के प्रति सच्चे स्वाभिमान का भाव है, मनुष्य के प्रति स्वाभाविक प्रेम का भाव है और सौन्दर्य के प्रति सहज आकर्षण है। उनकी कविताओं में प्रकृति, मनुष्य और देश–इन तीनों के प्रति अनुरक्ति है। वे सौन्दर्य और मस्ती के कवि तो हैं ही, किन्तु उनकी कविताओं में राष्ट–प्रेम और जागरण के स्वर भी अत्यंत प्रखर हैं। चीनी–आक्रमण के समय नेपाली जी की कलम तो जैसे आग ही उगल रही थी । वे जनता में घूम–घूम कर देशभक्ति की भावना जगा रहे थे । राष्ट्र के संकट की घड़ी में वे 'वन मैन आर्मी' की तरह पूरे देश को सजग करते हुए दुश्मनों के लिए चुनौती बने हुए थे । उन्होंने तब लिखा था–

"हुआ देश खातिर जनम है हमारा,
कि कवि हैं तड़पना करम है हमारा।
कि कमजोर पाके मिटा दे न कोई,
इसी से जगाना धरम है हमारा।।"

नेपाली जी का साफ तौर पर कहना है कि –

"पहले हमने गुण राम श्याम का गाया था,
विरही मन का बादल को दूत बनाया था,
अब कुटियों का चौमास बदलनेवाले हैं,
हम तो कवि हैं इतिहास बदलने वाले हैं।"

–और मुझे लगता है, निश्चय ही इतिहास बदलने का काम नेपाली जी ने किया भी। प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य की कविताएँ लिखते हुए भी उनकी सामाजिक चेतना की धार इतनी प्रखर थी कि वे उस जमाने भी पूरे साहस और दिलेरी के साथ जज्बाती तौर पर यह बयान कर गये कि –

सड़ी–गली प्राचीन रूढ़ि के भवन गिरेंगे, दुर्ग ढहेंगे,
युग–प्रवाह पर कटे वृक्ष से दुनिया भर के ढोंग बहेंगे।
पतित–दलित मस्तक ऊँचा कर संघर्षों की कथा कहेंगे,
और मनुज के लिए मनुज के द्वार खुले के खुले रहेंगे।"

कवि क्रांतदर्शी होते हैं, नेपाली जी की कलम ने यह प्रमाणित कर दिया। आज समाज के अभिवंचित वर्ग के लोग अगर मस्तक ऊँचा कर अपने संघर्षो की बदौलत सामाजिक न्याय हासिल करने की दिशा में अग्रसर हैं, तो यह नेपाली जी जैसे कवियों के उद्‌बोधन और हुँकार का ही परिणाम है।

नेपाली जी ने फिल्मों के लिए भी लगभग 400 गीतों की रचना की, जिन्हें लता मंगेशकर, मो॰ रफी, आशा भोसले, मन्ना डे, किशोर कुमार जैसे मशहूर गायकों ने गाया। बाद में उन्होंने कुछ फिल्में भी बनायीं। नेपाली जी वस्तुतः माँ सरस्वती के वरद् पुत्र थे, जिन्होंने कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में बिहार का नाम पूरी दुनियॉ में रौशन किया।

मैं आज नेपाली जी की जयन्ती के अवसर पर उन्हें अपनी 'प्रणति' निवेदित करता हूँ और सविता सिंह 'नेपाली' सहित आप सभी साहित्यकारों, साहित्यप्रेमियों तथा कला और संस्कृति से जुड़े सभी लोगों को ऐसे सफल आयोजन के लिए साधुवाद देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।